1 थिस्सलुनीकियों (भाग 3)
पद दर पद पुस्तक का अध्ययन
अक्तूबर 01, 2023

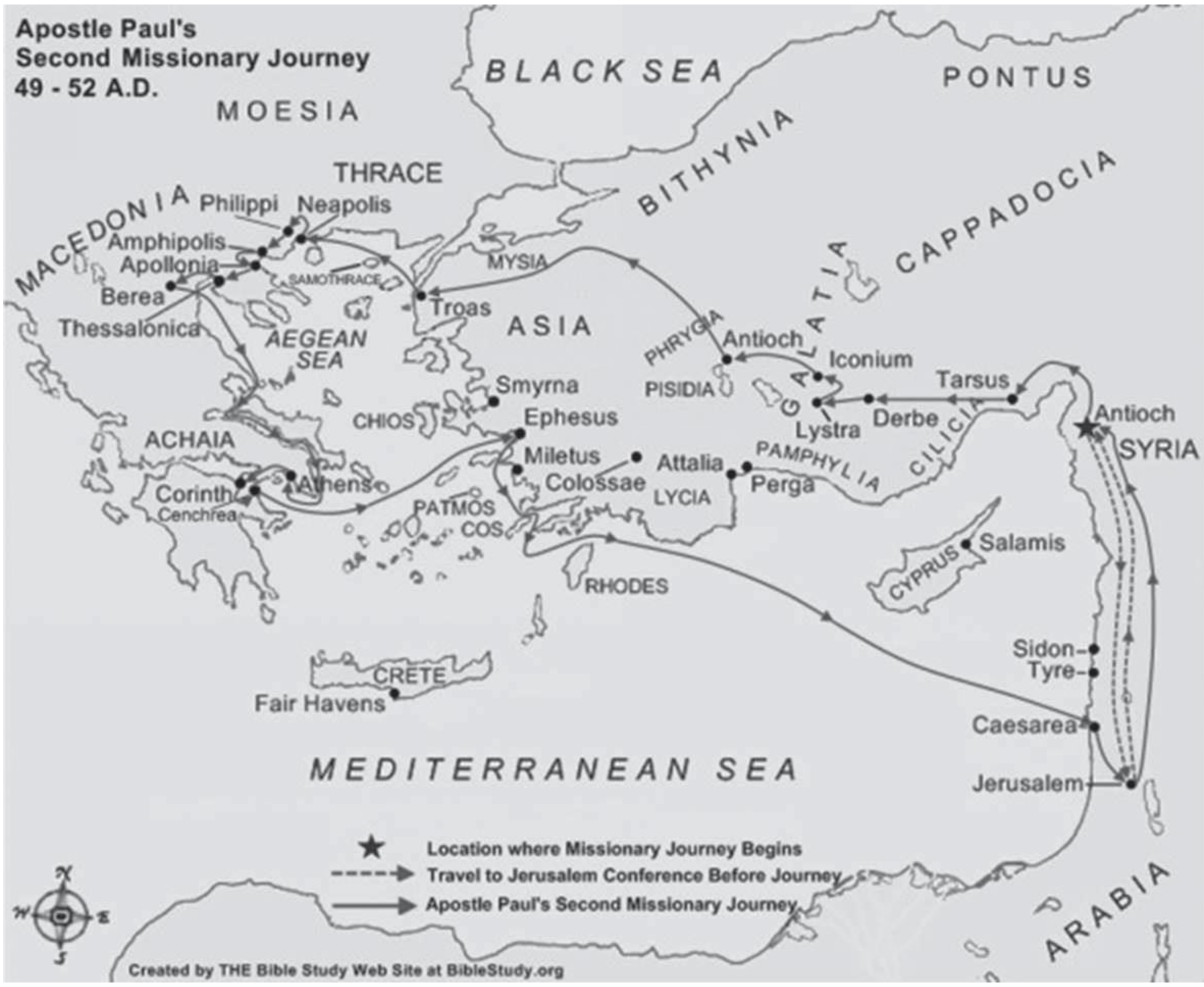

1 थिस्स्लुनिकियों 5
समय और काल

1 पर हे भाइयो, इसका प्रयोजन नहीं कि समयों और कालों के विषय में तुम्हारे पास कुछ लिखा जाए।
2 क्योंकि तुम आप ठीक जानते हो कि जैसा रात को चोर आता है, वैसा ही प्रभु का दिन आनेवाला है।
3 जब लोग कहते होंगे, "कुशल है, और कुछ भय नहीं," तो उन पर एकाएक विनाश आ पड़ेगा, जिस प्रकार गर्भवती पर पीड़ा; और वे किसी रीति से न बचेंगे।

- **वचन 1**:

जब प्रेरित पौलुस 3-4 सप्ताह थिस्सलुनीकियों में थे (प्रेरितों के काम 17:2) तब उन्होंने प्रभु के आने के विषय में शिक्षा दी। "प्रभु के आगमन का विषय पौलुस द्वारा थिस्सलुनीकियों को लिखी गयी दोनों पत्रियों में पाया जाता है (1 थिस्सलुनीकियों 1:10; 1 थिस्सलुनीकियों 2:19-20; 1 थिस्सलुनीकियों 3:13; 1 थिस्सलुनीकियों 4:13-18; 1 थिस्सलुनीकियों 5:1-11, 23; 2 थिस्सलुनीकियों 1:7-10; 2 थिस्सलुनीकियों 2:1-10)।

अध्याय 4 के अंत में (1 थिस्सलुनीकियों 4:13-18), पौलुस ने वर्णन किया है कि कैसे हम (कलीसिया) हवा में प्रभु से मिलने के लिए उठा लिए जाएंगे। अब वह प्रभु के आगमन के विषय में और गहरी जानकारी देता है।

1 लेकिन समयों और कालों के विषय में, ...
समय (यूनानी शब्द *'क्रोनोस'* - समय की अवधि) और काल (यूनानी शब्द '*काइरोस'* - उपयुक्त समय, सही समय, या वह समय जो पूरा हो चुका है। क्रोनोस (समय के बीतने) का प्रवाह हमें उस काइरोस (परमेश्वर के नियत समय) के करीब ले जाता है, जो परमेश्वर ने करने के लिए कहा है।"

एक विश्वासी होने के नाते हमें इन समयों और कालों के प्रति जिसमें हम जी रहे हैं और प्रभु के आगमन का इनसे क्या सम्बन्ध हैं इसके प्रति सचेत होने की आवश्यकता है। प्रभु यीशु ने फरीसियों को इसलिए डांटा क्योंकि वे उन आत्मिक समयों और कालों को पहचान नहीं पा रहे थे जिसमें परमेश्वर उनके बीच में कार्य कर रहे थे। (**मत्ती 16:1-3)**

- **वचन 2:**

"पवित्रशास्त्र में *'प्रभु का दिन'* वाक्यांश का उपयोग अक्सर तब किया जाता है जब परमेश्वर अपनी योजना और उद्देश्यों को पूरा करने के लिए मनुष्य के मामलों में हस्तक्षेप करता है। इसका उपयोग अक्सर प्रभु के आगमन और न्याय के दिन के संदर्भ में किया जाता है।"

हालांकि हम समय और कालों को पहचान सकते हैं (और हमें इन्हें पहचानना भी चाहिए), लेकिन हम उस 'दिन' को नहीं जानते, क्योंकि वह 'दिन' अचानक से आएगा जैसे रात में कोई चोर आता है। **मत्ती 24:36** में यीशु ने हमें सिखाया था कि हम उस दिन या उस घड़ी को नहीं जानेंगे। हालाँकि हम उस समय की निकटता को पहचानते हुए जी रहे हैं, फिर भी हम उस दिन से अनजान हैं जिस दिन प्रभु वापस आएँगे। इसलिए, पूरे जीवन काल को जीने की योजना बनाने और साथ ही हर दिन प्रभु के लिए तैयार रहने के बीच एक सुखद "तनाव" बना रहता है।

- **वचन 3:**

यह पद "तूफान से पहले की शांति" का वर्णन करता हुआ प्रतीत होता है।

'जब वे कहते होंगे, 'शांति और सुरक्षा है!' *तब उन पर अचानक विनाश आ पड़ेगा*।'
पद 1 और 2 में, पौलुस ने विश्वासियों को 'भाइयों' और 'तुम स्वयं' कहकर संबोधित किया है।
पद 3 का 'वे' शब्द संसार के अविश्वासियों को संदर्भित करता है।
संसार 'शांति और सुरक्षा' की एक झूठी अवस्था में पड़ा होगा। और फिर एकाएक, चीजें 'अचानक विनाश' में बदल जाएंगी।

'शांति और सुरक्षा' की यह भावना संसार की स्थिति को दर्शाती हुई प्रतीत होती है—जो सरकारों द्वारा बनाई गई मानसिकता, समृद्धि के अनुभव और आदि कारणों के द्वारा पैदा होती है, जो कलीसिया के (उठा लिए जाने) और 7 साल के महाक्लेश की शुरुआत से ठीक पहले होगी। हम ऐसा दो कारणों से कहते हैं:

1) जिस तरह से गर्भवती पर अचानक से पीड़ा आती है वैसे ही 'अचानक विनाश' का समय आ जायेगा, जो 7 साल के दर्द यानी 'महाक्लेश' की तस्वीर प्रतीत होती है।

2) पौलुस कहता है कि *'अचानक विनाश उन पर आता है', हम पर नहीं,* और *'वे बच न सकेंगे'*—यहाँ संसार उस अचानक आनेवाले विनाश से न बच पायेगा जो उस पर पर आने वाला है।
   इसका अर्थ यह है कि 'हम' (विश्वासी) बच जाएंगे और उस 'अचानक विनाश' का हिस्सा नहीं होंगे जो दुनिया पर आएगा।

यह इस बात के समान है कि प्रभु यीशु ने कलीसिया के लिए अपने आने के समय का वर्णन कैसे किया था।"

मत्ती 24:36-42
36 "उस दिन और उस घड़ी के विषय में कोई नहीं जानता, न स्वर्ग के दूत और न पुत्र, परन्तु केवल पिता।
37 जैसे नूह के दिन थे, वैसा ही मनुष्य के पुत्र का आना भी होगा।
38 क्योंकि जैसे जल–प्रलय से पहले के दिनों में, जिस दिन तक कि नूह जहाज पर न चढ़ा, उस दिन तक लोग खाते–पीते थे, और उनमें विवाह होते थे।
39 और जब तक जल–प्रलय आकर उन सब को बहा न ले गया, तब तक उनको कुछ भी मालूम न पड़ा; वैसे ही मनुष्य के पुत्र का आना भी होगा।
40 उस समय दो जन खेत में होंगे, एक ले लिया जाएगा और दूसरा छोड़ दिया जाएगा।
41 दो स्त्रियाँ चक्की पीसती रहेंगी, एक ले ली जाएगी और दूसरी छोड़ दी जाएगी।
42 इसलिये जागते रहो, क्योंकि तुम नहीं जानते कि तुम्हारा प्रभु किस दिन आएगा।

1 थिस्सलुनीकियों 5:3 में सुरक्षा और शांति के दिनों की तुलना नूह के समय में आनेवाले जल प्रलय से पहले के दिनों से की गयी है। (मत्ती 24:38)

यहाँ नूह और उसके परिवार के जहाज़ में प्रवेश करने की तुलना उन लोगों से की गयी है जो संसार से *उठा लिए* जायेंगे (वचन 40-41), और जिन्होंने जहाज़ में प्रवेश नहीं किया और वे जल प्रलय से नाश हो गए ये वे हैं जो इस संसार में *छूट जायेंगे* (वचन 40-41)।

सावधान और जागते रहो

4 पर हे भाइयो, तुम तो अन्धकार में नहीं हो कि वह दिन तुम पर चोर के समान आ पड़े।
5 क्योंकि तुम सब ज्योति की सन्तान और दिन की सन्तान हो; हम न रात के हैं, न अन्धकार के हैं।
6 इसलिये हम दूसरों के समान सोते न रहें, पर जागते और सावधान रहें।
7 क्योंकि जो सोते हैं वे रात ही को सोते हैं, और जो मतवाले होते हैं वे रात ही को मतवाले होते हैं।
8 पर हम जो दिन के हैं, विश्वास और प्रेम की झिलम पहिनकर और उद्धार की आशा का टोप पहिनकर सावधान रहें।
9 क्योंकि परमेश्वर ने हमें क्रोध के लिये नहीं, परन्तु इसलिये ठहराया है कि हम अपने प्रभु यीशु मसीह के द्वारा उद्धार प्राप्त करें।
10 वह हमारे लिये इस कारण मरा कि हम चाहे जागते हों चाहे सोते हों, सब मिलकर उसी के साथ जीएँ।
11 इस कारण एक दूसरे को शान्ति दो और एक दूसरे की उन्नति का कारण बनो, जैसा कि तुम करते भी हो।

- **वचन 4-8:**

एक विश्वासी के रूप में हम 'प्रभु के दिन' के लिए निरंतर तैयार रहने के साथ जी सकते हैं, यदि हम हर समय 'ज्योति की संतान' (अंधकार की संतान के विपरीत) के रूप में जीवन बिताएं, और जागते व सचेत रहें (सोए हुए या मतवालों के विपरीत) और हम विश्वास, आशा और प्रेम में जीवन बिताकर अपनी आत्मिक सुरक्षा (झिलम और टोप) के साथ रहते हैं।

ज्योति की संतान के रूप में जिएं – वह करें जो परमेश्वर के समक्ष सही है। जागते (सतर्क) और सचेत रहें – संसार या शैतान आपको किसी भी तरह से अपना गुलाम न बना लें।
विश्वास, आशा और प्रेम के साथ जिएं – यह आपको सुरक्षित रखता है।

- **वचन 9-11:**

[9] क्योंकि परमेश्वर ने हमें क्रोध के लिये नहीं, परन्तु इसलिये ठहराया है कि हम अपने प्रभु यीशु मसीह के द्वारा उद्धार प्राप्त करें।
[10] वह हमारे लिये इस कारण मरा कि हम चाहे जागते हों चाहे सोते हों, सब मिलकर उसी के साथ जीएँ।
[11] इस कारण एक दूसरे को शान्ति दो और एक दूसरे की उन्नति का कारण बनो, जैसा कि तुम करते भी हो।

"इस संदर्भ में, यहाँ "क्रोध" का अर्थ उस "अचानक विनाश" और "प्रसव पीड़ा" से है जिसका उल्लेख पहले पद 3 में किया गया है, जो संसार पर आएगा और जिससे संसार बच नहीं पाएगा।

इस "आने वाले क्रोध" 'और "*उसके पुत्र के स्वर्ग से आने की प्रतीक्षा करना, जिसे परमेश्वर ने मरे हुओं में से जिलाया हैं, अर्थात् यीशु, जो हमें आने वाले क्रोध से बचाता है* " इन सब बातों का उल्लेख 1 थिस्सलुनीकियों 1:10 में पहले भी किया गया था।

यह वाक्यांश कि *"चाहे हम जागते हों या सोते हों, हम उसके साथ मिलकर जिएं',* वही है जिसका वर्णन पौलुस ने 1 थिस्सलुनीकियों 4:16-17 में पहले ही किया था: *'और जो मसीह में मरे हैं, वे पहले जी उठेंगे। तब हम जो जीवित और बचे रहेंगे, उनके साथ बादलों पर उठा लिए जाएंगे कि हवा में प्रभु से मिलें; और इस रीति से हम सदा प्रभु के साथ रहेंगे।'*

एक बार फिर पद 5:11 में, जैसा कि उसने पहले 1 थिस्सलुनीकियों 4:18 में किया था, पौलुस विश्वासियों को प्रभु के साथ रहने की इस आशा के माध्यम से शांति (सांत्वना) देने के लिए प्रोत्साहित करता है।

यहाँ हम यह बात दृढ़ता से कह सकते हैं कि अध्याय 4 में वर्णित 'कलीसिया का उठा लिया जाना, पृथ्वी पर आनेवाले "अचानक विनाश", "प्रसव पीड़ा" और "क्रोध" से पहले होगा। जब संसार सात साल के महाक्लेश से गुजरेगा, तब कलीसिया पृथ्वी पर नहीं होगी, बल्कि हम 'प्रभु के साथ' होंगे।

अंतिम निर्देश

- **वचन 12,13:**

[12] हे भाइयो, हम तुम से विनती करते हैं कि जो तुम में परिश्रम करते हैं, और प्रभु में तुम्हारे अगुवे हैं, और तुम्हें शिक्षा देते हैं, उनका सम्मान करो।
[13] और उनके काम के कारण प्रेम के साथ उनको बहुत ही आदर के योग्य समझो। आपस में मेलमिलाप से रहो।

"पौलुस ने थिस्सलुनीकियों को यह पत्र कलीसिया की स्थापना के लगभग एक वर्ष बाद लिखा था। यह बड़ी रोचक बात है कि इतने कम समय में ही वहां ऐसे लोग तैयार हो गए थे जो उनकी सेवा कर रहे थे ("तुम्हारे बीच परिश्रम करते हैं"), अगुवाई कर रहे थे ("तुम्हारे ऊपर हैं") और आत्मिक रूप से प्रभु में उनका मार्गदर्शन ("तुम्हें चेतावनी देते हैं") कर रहे थे। यह विश्वासियों के एक अच्छे, स्वस्थ और फलते-फूलते समुदाय का संकेत है—उन सतावों की चुनौतियों के बावजूद जिनका उन्होंने सामना किया।

पौलुस विश्वासियों को प्रोत्साहित करता है कि वे उन्हें "पहचानें" और प्रेम के साथ उनका "बहुत अधिक सम्मान करें"।

जब हमारे बीच कई लोग सेवा और नेतृत्व का कार्य करते हैं तो इससे हमारे मध्य विभाजन नहीं आना चाहिए। हमें आपस में शांति बनाए रखनी चाहिए।"

- **वचन 14:**

[14] हे भाइयो, हम तुम्हें समझाते हैं कि जो ठीक चाल नहीं चलते उनको समझाओ, कायरों को ढाढ़स दो, निर्बलों को संभालो, सब की ओर सहनशीलता दिखाओ।

कलीसिया एक ऐसा समुदाय है जहाँ हम जीवन की यात्रा और विश्वास का सफर एक साथ मिलकर पूरा करते हैं। हमें अलगाव में या अकेले होकर नहीं चल सकते है। और एक समुदाय में, हमें अलग-अलग प्रकार के लोग मिलेंगे। पौलुस यहाँ कुछ का उल्लेख करता है: बेलगाम, हताश, और निर्बल।

बेलगाम: अव्यवस्थित, गैर-जिम्मेदार, आज्ञा न मानने वाले, अनुशासनहीन।
हताश: पूरी तरह थके हुए या निराश।
निर्बल: जिनकी शक्ति क्षीण हो रही है।
हम भिन्न-भिन्न लोगों के साथ उनकी स्थिति और वे किस परिस्थिति से गुज़र रहे हैं, उसके अनुसार अलग-अलग तरीके से काम करते हैं।
हमें सभी के साथ धीरज रखना चाहिए..."

- **वचन 15:**

[15] सावधान! कोई किसी से बुराई के बदले बुराई न करे; पर सदा भलाई करने पर तत्पर रहो, आपस में और सबसे भी भलाई ही की चेष्टा करो।

किसी से बुराई के बदले बुराई न करों। बदला न लेना।

"........ तुम्हारे और दूसरों के लिए जो भला हो सदा उसका पीछा करो।"

"हमें सदा वह काम करना चाहिए जो भला हो और जो कलीसिया के साथ-साथ हमारे आसपास के सभी लोगों के हित में हो।

कभी-कभी, स्थानीय कलीसिया केवल अपने ही बारे में और अपनी ही भलाई के बारे में सोचती हैं। हालाँकि, हमें वह करना है जो हमारे लिए (स्थानीय कलीसियाई समुदाय) और सभी के लिए (हमारे आसपास के सभी लोगों के लिए भी) भला हो।

उदाहरण:
हमारे संदर्भ में उन सरल व्यावहारिक बातों के बारे में सोचें जहाँ स्थानीय कलीसियाएँ अपने आसपास के लोगों के बारे में नहीं सोचती हैं:

- **ध्वनि:** यदि हमारी सभाओं की आवाज़ पड़ोसियों को परेशान कर रही है।
- **पार्किंग:** यदि हम अपने वाहनों से सड़क भर देते हैं जिससे यातायात बाधित होता है।
- **सार्वजनिक स्थानों का उपयोग:** यदि हम अनुमति के बिना सार्वजनिक स्थानों पर स्टाल आदि लगाते हैं जिससे अन्य लोगों को असुविधा होती है।
- **समाज सेवा:** हमें केवल कलीसिया के लोगों की ही नहीं, बल्कि अपने आसपास के जरूरतमंद लोगों की भी मदद करने की आवश्यकता है।"

- **वचन 16-18:**

[16] सदा आनन्दित रहो।
[17] निरन्तर प्रार्थना में लगे रहो।
[18] हर बात में धन्यवाद करो; क्योंकि तुम्हारे लिये मसीह यीशु में परमेश्वर की यही इच्छा है।

यह एक अकेला पद है। यह हमें बताता है कि हमें कैसा जीवन बिताना चाहिए।
यीशु में हमारे लिए परमेश्वर की यह इच्छा है कि: हम सदा आनन्दित रहे, सदा प्रार्थना में लगे रहें, सदा धन्यवादी बने रहे। आनन्दित रहे. प्रार्थना करे. धन्यवादी।

परमेश्वर सदा भला है

इसलिए, एक विश्वासी के रूप में, हम सदा आनन्दित हो सकते है, प्रार्थना कर सकते और धन्यवादी बने रह सकते हैं।

- **वचन 19-22:**

19 आत्मा को न बुझाओ।
20 भविष्यद्वाणियों को तुच्छ न जानो।
21 सब बातों को परखो; जो अच्छी है उसे पकड़े रहो।
22 सब प्रकार की बुराई से बचे रहो।

"ये वचन संकेत देते हैं कि प्रेरित पौलुस ने थिस्सलुनीके में अपने 3-4 सप्ताह बिताने के दौरान विश्वासियों को पवित्र आत्मा के कार्य, उसकी सेवा और आत्मा के वरदानों के बारे में भी सिखाया था। इतने कम समय में भी ये विश्वासी पहले से ही आत्मा के वरदानों का उपयोग कर रहे थे।

ऐसा प्रतीत होता है कि वहां पवित्र आत्मा का प्रकटीकरण इतना अधिक हो रहा था कि पौलुस को (जैसा उसने बाद में कुरिन्थियों के साथ भी किया) उन्हें यह सिखाना पड़ा कि आत्मिक प्रकटीकरणों की बहुतायत को तुच्छ समझे बिना, इसके प्रवाह को कैसे बनाए रखा जाए।

पवित्र आत्मा को स्वतंत्र रूप से बहने दें। भविष्यद्वाणियों को तुच्छ न जानें। हालाँकि, सभी आत्मिक प्रकटीकरणों को परखें। जो भला है उसे थामे रहें। जो भला नहीं है उसे छोड़ दें। और बुराई के हर रूप (दिखावे, अभिव्यक्ति, मंशा) से दूर रहें।"

आशीर्वाद

- **वचन 23-28:**

23 शान्ति का परमेश्वर आप ही तुम्हें पूरी रीति से पवित्र करे; और तुम्हारी आत्मा और प्राण और देह हमारे प्रभु यीशु मसीह के आने तक पूरे पूरे और निर्दोष सुरक्षित रहें।
24 तुम्हारा बुलाने-वाला सच्चा है, और वह ऐसा ही करेगा।
25 हे भाइयो, हमारे लिये प्रार्थना करो।
26 सब भाइयों को पवित्र चुम्बन से नमस्कार करो।
27 मैं तुम्हें प्रभु की शपथ देता हूँ कि यह पत्री सब भाइयों को पढ़कर सुनाई जाए।
28 हमारे प्रभु यीशु मसीह का अनुग्रह तुम पर होता रहे।

ये वे समापन प्रार्थना और आशीर्वाद हैं जो पौलुस की पत्रियों की विशेषता बन गए। वह परमेश्वर की आशीषों की घोषणा करते हुए परमेश्वर से प्रार्थना करते हैं कि वह अपने लोगों के अस्तित्व के हर क्षेत्र (आत्मा, प्राण और शरीर) में पवित्रता ("तुमको पवित्र करने") और धार्मिकता (यीशु के आने तक तुम्हें निर्दोष और पाप मुक्त रखने) का पूर्ण कार्य करे।

पौलुस पुष्टि करते हैं कि परमेश्वर उन्हें पवित्र करने और सुरक्षित रखने का यह कार्य करेंगे—क्योंकि वह विश्वासयोग्य हैं।

पौलुस विश्वासियों से अपने लिए प्रार्थना करने का विनती करते हैं। हमें सुसमाचार के प्रचारकों के लिए प्रार्थना करने की आवश्यकता है।

2 थिस्सलुनीकियों 1

यह दूसरी पत्री पहली पत्री के कुछ ही समय बाद, लगभग 52 ईस्वी में लिखी गयी थी। शायद उन्हें थिस्सलुनीकियों की कलीसिया से उनकी पत्री का उत्तर मिला था या उनकी स्थिति के बारे में जानकारी मिली थी, और उन्होंने कुछ मामलों पर तुरंत ध्यान देने की आवश्यकता महसूस की।

ऐसा लगता है कि दूसरे पत्र को लिखने के पीछे दो मुख्य मुद्दे थे:

1, ऐसा लगता है कि कुछ लोगों ने पौलुस की बातों को गलत तरीके से पेश किया था, यह इशारा करते हुए कि पौलुस ने कहा है कि प्रभु का दिन आ चुका है (2 थिस्सलुनीकियों 2:1-3। इसलिए, पौलुस को स्पष्ट करना पड़ा और इस बारे में अधिक जानकारी देना पड़ा कि प्रभु का दिन कब आने की संभावना है।

2, ऐसा लगता है कि कुछ विश्वासियों को लगा कि शायद अब काम करने की ज़रूरत नहीं है, क्योंकि दुनिया का अंत करीब था। वे लोग कामकाज छोड़कर गपशप और बेकार की बातों में लगे रहते थे। पौलुस को उनके साथ बहुत सख्ती से पेश आना पड़ा। उन्होंने इस दूसरे पत्र (3:8, 12) में बहुत कड़े शब्दों में काम करने के महत्व को दोहराया, जिसके बारे में उन्होंने पहले पत्र में भी बताया था।

पहले पत्र की तरह ही, पौलुस इन नए विश्वासियों के विश्वास, आशा और प्रेम की सराहना करते हैं और उन्हें सताव के बीच भी अपने विश्वास पर दृढ़ बने रहने के लिए प्रोत्साहित करते हैं।

अभिवादन

- **वचन 1-4:**

1 पौलुस और सिलवानुस और तीमुथियुस की ओर से थिस्सलुनीकियों की कलीसिया के नाम, जो हमारे पिता परमेश्वर और प्रभु यीशु मसीह में है:
2 हमारे पिता परमेश्वर और प्रभु यीशु मसीह की ओर से तुम्हें अनुग्रह और शान्ति मिलती रहे।
3 हे भाइयो, तुम्हारे विषय में हमें हर समय परमेश्वर का धन्यवाद करना चाहिए, और यह उचित भी है, इसलिये कि तुम्हारा विश्वास बहुत बढ़ता जाता है, और तुम सब का प्रेम आपस में बहुत ही बढ़ता जाता है
4 यहाँ तक कि हम आप परमेश्वर की कलीसिया में तुम्हारे विषय में घमण्ड करते हैं कि जितने उपद्रव और क्लेश तुम सहते हो, उन सब में तुम्हारा धीरज और विश्वास प्रगट होता है।

पौलुस इस बढ़ते हुए विश्वासी समुदाय के लिए आभारी है और इसकी खुशी मनाता है। अपनी पहली पत्री की तरह, वह इस बार भी उनके विश्वास, प्रेम और धीरज (आशा से भरी सहनशीलता) की सराहना करता है, जो उन्होंने अपनी मुश्किलों और सतावों के बावजूद बनाए रखा।

जब वह उस दिन आएगा

- **वचन 5-10:**

5 यह परमेश्वर के सच्चे न्याय का स्पष्ट प्रमाण है कि तुम परमेश्वर के राज्य के योग्य ठहरो, जिसके लिये तुम दुख भी उठाते हो।
6 क्योंकि परमेश्वर के निकट यह न्याय है कि जो तुम्हें क्लेश देते हैं, उन्हें बदले में क्लेश दे
7 और तुम्हें, जो क्लेश पाते हो, हमारे साथ चैन दे; उस समय जब कि प्रभु यीशु अपने सामर्थी दूतों के साथ, धधकती हुई आग में स्वर्ग से प्रगट होगा,
8 और जो परमेश्वर को नहीं पहचानते और हमारे प्रभु यीशु के सुसमाचार को नहीं मानते उनसे पलटा लेगा।
9 वे प्रभु के सामने से और उसकी शक्ति के तेज से दूर होकर अनन्त विनाश का दण्ड पाएँगे।
10 यह उस दिन होगा, जब वह अपने पवित्र लोगों में महिमा पाने और सब विश्वास करनेवालों में आश्चर्य का कारण होने को आएगा; क्योंकि तुम ने हमारी गवाही पर विश्वास किया।

पौलुस फिर से इन विश्वासियों को परमेश्वर के राज्य और प्रभु यीशु के आगमन के विषय में स्मरण कराते हुए, उन्हें विश्वास, आशा और प्रेम में चलने के लिए उत्साहित करता है।

हम सदा तुम्हारे लिए प्रार्थना करते हैं

- **वचन 11,12:**

11 इसी लिये हम सदा तुम्हारे लिये प्रार्थना भी करते हैं कि हमारा परमेश्वर तुम्हें इस बुलाहट के योग्य समझे, और भलाई की हर एक इच्छा और विश्वास के हर एक काम को सामर्थ्य सहित पूरा करे,
12 ताकि हमारे परमेश्वर और प्रभु यीशु मसीह के अनुग्रह के अनुसार हमारे प्रभु यीशु का नाम तुम में महिमा पाए, और तुम उस में।

पौलुस उन्हें बताता है कि वह उनके लिए और उनके द्वारा होने वाले परमेश्वर के कार्यों के लिए निरंतर प्रार्थना कर रहा है। उसने प्रार्थना की कि:

- परमेश्वर आपको इस बुलाहट के योग्य समझे – यानी आपको अपनी उस बुलाहट के अनुसार जीवन जीने के योग्य बनाए।
- परमेश्वर अपनी भलाई की हर इच्छा को पूरा करे – परमेश्वर आपके भीतर अपने उस भले काम को पूरा करे, जिससे वे सभी अच्छी बातें सिद्ध हों जो वह आपके द्वारा करना चाहता है।
- परमेश्वर सामर्थ्य के साथ विश्वास के कार्य को पूरा करे – परमेश्वर आपके विश्वास के कार्यों को अपनी सामर्थ से पूरा करे, ताकि आप देख सकें कि जो कुछ भी आप विश्वास से करते हैं, उसमें उसकी सामर्थ्य साथ है।
- यीशु का नाम आप में महिमा पाए – आपके जीवन के द्वारा प्रभु की महिमा और उनका आदर हो।
- और आप भी प्रभु में महिमा पायें – और आप भी यह देख सकें कि परमेश्वर आपके जीवन को महिमा दे रहे हैं।

लाइफ़ ग्रुप अध्ययन मार्गदर्शिका

यह लाइफ ग्रुप चर्चाओं में उपयोग के लिए एक सरल मार्गदर्शिका है। हमारा उद्देश्य रविवार के संदेश के अनुप्रयोग पर ध्यान केंद्रित करना है—कि कैसे प्रत्येक व्यक्ति वचन का करने वाला बन रहा है और अपने जीवन को परमेश्वर के पवित्र वचन पर बना रहा है। लाइफ ग्रुप की सभा सामान्यतः 2 घंटे की होती है। प्रत्येक लाइफ ग्रुप में लगभग 12-15 लोग होते हैं।

तैयारी

लाइफ ग्रुप बैठक की तैयारी के लिए, आप Sermon Key Points (पाँच मिनट में संदेश का सार) या पूरा रविवार का संदेश सुन सकते हैं। आप रविवार के संदेश के नोट्स भी देख सकते हैं। यह सभी "All Peoples Church Bangalore-ऑल पीपल्स चर्च बैंगलोर" मोबाइल ऐप में या ऑनलाइन **apcwo.org/sermons** पर उपलब्ध हैं। लाइफ ग्रुप बैठक के लिए प्रार्थना करें और पवित्र आत्मा के कार्य और सेवकाई को आमंत्रित करें।

स्वागत

लाइफ ग्रुप बैठक की शुरुआत प्रार्थना, आराधना और किसी मनोरंजक गतिविधि के समय से हो सकती है।

परमेश्वर के वचन को सुनें

निम्नलिखित शास्त्र खंड पढ़ें: 1 थिस्सलुनीकियों 5, 2 थिस्सलुनीकियों 1

मिलकर परमेश्वर के वचन की जाँच करें

कृपया इनमें से कुछ प्रश्नों पर मिलकर चर्चा करें, और लोगों को अपनी समझ साझा करने का अवसर दें। हम प्रत्येक व्यक्ति को प्रोत्साहित करते हैं कि समूह चर्चा के दौरान अपने व्यक्तिगत सीख को लिख लें।

1) *1 थिस्सलुनीकियों 5:4-8 में, मसीह के लौटने को ध्यान में रखकर हम विश्वासियों को अपना जीवन कैसे जीना चाहिए? हम इसे अपने प्रतिदिन के व्यावहारिक जीवन में कैसे करेंगे?*

2) *1 थिस्सलुनीकियों 5:14-22, पौलुस ने थिस्लुनिकियों को जो अंतिम निर्देशों की सूची दी हैं उनकी पुनर्विचार करें। विचार विमर्श करें कि आज विश्वासियों के रूप में हम इन निर्देशों का पालन कैसे कर सकते हैं।*

3) *2 थिस्सलुनीकियों १:3-4 में, सताव और क्लेशों के मध्य, उनका विश्वास, प्रेम बढ़ा, और धीरज मज़बूत हुआ। हम इस बात के लिए कैसे सुनिश्चित कर सकते हैं कि जब हम कठिनाईयों, सताव, या क्लेशों का सामना करेंगे तो हमारा भी यही आत्मिक व्यवहार होगा?*

यदि समय अनुमति दे, तो प्रत्येक व्यक्ति कुछ मिनट (अधिकतम तीन मिनट) लेकर एक या दो मुख्य सीख साझा करे और यह बताए कि वे इसे अपने विशिष्ट जीवन परिस्थितियों में कैसे लागू होते हुए देखते हैं। प्रत्येक व्यक्ति को भाग लेने और साझा करने के लिए प्रोत्साहित करें।

अपने जीवन और आत्मिक यात्रा को साझा करते हुए संगति करें

प्रत्येक व्यक्ति कुछ मिनट (अधिकतम 3 मिनट) लेकर परमेश्वर के साथ अपने जीवन से संबंधित कुछ भी साझा करे—जो कुछ परमेश्वर उन्हें सिखा रहा है, प्रार्थना के उत्तर की कोई गवाही, या कोई विशेष चुनौती जिसके लिए वे प्रार्थना चाहते हैं। प्रत्येक व्यक्ति को भाग लेने और साझा करने के लिए प्रोत्साहित करें।

एक-दूसरे को प्रोत्साहित करें—प्रार्थना और सेवकाई के द्वारा

दो या तीन लोगों के छोटे समूहों में बँट जाएँ और बारी-बारी से आज जो सीखा गया है उसके प्रकाश में परमेश्वर को धन्यवाद दें और एक-दूसरे के लिए प्रार्थना करें। पवित्र आत्मा की अगुवाई सुनें। पवित्र आत्मा के वरदानों के बहने की अपेक्षा रखें—चंगाई, चमत्कारों की रिहाई, भविष्यवाणी आदि के द्वारा।

पुनः एकत्रित हों और इन विषयों के लिए मिलकर प्रार्थना करें:

1) *परिवारों की सुरक्षा और सुदृढ़ता के लिए*
2) *कलीसिया के रूप में हम पर परमेश्वर के पवित्र आत्मा का एक शक्तिशाली उंडेलाव हो, और हमारे द्वारा हमारे नगर और राष्ट्र में बहुतों को आशीष मिले। केवल परमेश्वर के आत्मा का सामर्थी कार्य ही हमारे नगर और राष्ट्र को बदल सकता है।*
3) *BUILD TO IMPACT (प्रभाव के लिए निर्माण करें) परियोजना के लिए—भूमि की खोज और अधिग्रहण की प्रक्रिया में परमेश्वर के हाथ की अगुवाई के लिए, और इस परियोजना को पूरा करने के लिए पर्याप्त से भी अधिक वित्तीय प्रावधान के लिए।*

एक साथ मिलकर परमेश्वर का धन्यवाद करते हुए समाप्त करे।

उपयोगी संसाधन

हर रविवार सुबह 10:30 बजे (भारतीय समय, GMT+5:30) हमारी ऑनलाइन संडे चर्च सेवा का लाइव प्रसारण देखें। पवित्र आत्मा से परिपूर्ण, अभिषिक्त आराधना, वचन और चंगाई, चमत्कार तथा छुटकारे की सेवा।
यूट्यूब: https://youtube.com/allpeopleschurchbangalore
वेबसाइट: https://apcwo.org/live

हमारी अन्य वेबसाइट्स और निःशुल्क संसाधन:
चर्च: https://apcwo.org
निःशुल्क संदेश: https://apcwo.org/resources/sermons
निःशुल्क पुस्तकें: https://apcwo.org/books/english
दैनिक भक्ति-वचन: https://apcwo.org/resources/daily-devotional
यीशु मसीह: https://examiningjesus.com
बाइबल कॉलेज: https://apcbiblecollege.org
ई-लर्निंग: https://apcbiblecollege.org/elearn
वीकेंड स्कूल्स: https://apcwo.org/ministries/weekend-schools
काउंसलिंग: https://chrysalislife.org
संगीत: https://apcmusic.org
मिनिस्टर्स फेलोशिप: https://pamfi.org
चर्च ऐप: https://apcwo.org/app
चर्चेस: https://apcwo.org/ministries/churches
विश्व मिशन: https://apcworldmissions.org

उपदेश की रूपरेखा
इन उपदेशों की श्रृंखला, प्रेरित पौलुस द्वारा लिखे गए पहले दो पत्रों, 1 और 2 थिस्सलुनीकियों का पद-दर-पद अध्ययन है। इस श्रृंखला के भाग-3 में हम 1 थिस्सलुनीकियों अध्याय 5 और 2 थिस्सलुनीकियों अध्याय 1 को सम्मिलित करेंगे। हम प्रभु यीशु मसीह के आगमन के प्रकाश में पौलुस के प्रोत्साहन और निर्देशों पर विचार करेंगे।

मुख्य शब्द
1 थिस्सलुनीकियों, 2 थिस्सलुनीकियों, थिस्सलुनीकियों, उपदेश, उपदेशों, उपदेशों के नोट्स, उपदेशों की रूपरेखा, मुफ्त उपदेशों के नोट्स, मुफ्त उपदेशों की रूपरेखा, बाइबल अध्ययन संसाधन।

संदर्भ/उद्धरण
जब तक अन्यथा संकेत न दिया गया हो, सभी शास्त्र वचन 'न्यू अमेरिकन स्टैंडर्ड बाइबल 2020' (NASB) से लिए गए हैं, कॉपीराइट © द लॉकमैन फाउंडेशन द्वारा। सर्वाधिकार सुरक्षित।

बाइबल की परिभाषाएँ, इब्रानी (Hebrew) और यूनानी (Greek) शब्द और उनके अर्थ निम्नलिखित संसाधनों से लिए गए हैं:

थेयर्स ग्रीक डेफिनिशन। प्रकाशन वर्ष 1886, 1889; पब्लिक डोमेन।

स्ट्रोंग्स हिब्रू एंड ग्रीक डिक्शनरीज, स्ट्रोंग्स एग्जॉस्टिव कॉन्कॉर्डेंस - जेम्स स्ट्रोंग, S.T.D., LL.D. द्वारा। प्रकाशन वर्ष 1890; पब्लिक डोमेन

वाइन्स कम्प्लीट एक्सपोजिटरी डिक्शनरी ऑफ ओल्ड एंड न्यू टेस्टामेंट वर्ड्स, © 1984, 1996, थॉमस नेल्सन, इंक., नैशविले, TN

माउंस कंसाइस ग्रीक-इंग्लिश डिक्शनरी। विलियम डी. माउंस द्वारा रिक डी. बेनेट, जूनियर के साथ संपादित (1993)।

वर्ड पिक्चर्स इन द न्यू टेस्टामेंट। आर्चीबाल्ड थॉमस रॉबर्टसन। प्रकाशन वर्ष 1930-1933; पब्लिक डोमेन।

वर्ड स्टडीज इन द न्यू टेस्टामेंट। मार्विन आर. विन्सेंट, D.D. (1887)।